

त्रयोदशाग्नि

मानव शरीर पञ्चमहाभूत, सप्त धातु इत्यादि शरीरोत्पत्ति कारणों से तेरह प्रकार की अग्नियों को धारण करता है। इन सभी अग्नियों का कार्य शरीर को स्वस्थ रखने से है। इन सभी का सञ्चालन अथवा नियन्त्रण सबसे प्रमुख अग्नि जठराग्नि या पाचक अग्नि के हाथों में होता है। मानव शरीर में विद्यमान तेरह अग्नियाँ इस प्रकार हैं- एक जठराग्नि, पाँच भूताग्नियाँ और सात धात्वग्नियाँ।

1. जठराग्नि:- जठराग्नि शरीर में विद्यमान महत्त्वपूर्ण अग्नि है। सामान्य रूप में इसे पाचक अग्नि या कायाग्नि भी कहा जा सकता है। इसका आश्रय स्थल मानव शरीर का आमाशय, छोटी आंत और बड़ी आँत के मध्य नाभि प्रदेश माना जाता है। जठराग्नि अपनी यथाशक्ति के अनुसार मनुष्य के द्वारा खाये गए भोजन का पाचन करती है। मानव शरीर की स्थिति के अनुसार जठराग्नि भोजन को खण्डित करके उसकी शक्ति से भोजन को तरल पदार्थों में परिवर्तित करने शरीर का पोषण करती है। जठराग्नि पाचन क्रिया के माध्यम से मानव द्वारा सेवनीय भोजन को खण्डित करके शरीर के आयु, वर्ण, स्वर, शक्ति, उत्साह, शारीरिक तापमान का नियन्त्रण रखती है और अन्य सभी 12 अग्नियों को क्रियाशील बनाये रखने का प्रयत्न करती है या सहायता करती है। इन सभी कार्यों के करने के लिए जठराग्नि की साम्यावस्था उत्तरदायी होती है। अगर शरीर में यह अवस्था न हो, तो शरीर रोग से ग्रसित हो जाता है। जठराग्नि चार प्रकार की हो सकती है-

1.1 विषमाग्नि:- विषम अग्नि कभी अत्यधिक तेज होकर कभी भोजन का पाचन शीघ्र, कभी अत्यधिक मन्द होकर भोजन का पाचन कभी बहुत धीरे और कभी समान होकर भोजन का पाचन सामान्य रूप में ठीक ढंग से पचाती हैं। जिसके कारण मानव शरीर में पेट में तेज दर्द, भारीपन, अतिसार कब्ज और जलोदरादि जैसे रोगादि उत्पन्न हो जाते हैं। अग्नि की यह अवस्था वात दोष की वृद्धि के कारण होती है।

1.2 तीक्ष्णाग्नि:- नाम के अनुसार ही यह जठराग्नि अत्यधिक तीव्र होती है, जिसके कारण अधिक मात्रा में खाये गये भोजन भी बहुत जल्दी पच जाता है, जिससे मनुष्य अधिक खाने लगता है और इसका विपरीत परिणाम होता है, अवस्था में शरीर में गले, ओठ और तालु में सूखापन होने लगता है। मनुष्य को अत्यधिक गर्मी भी लगने लगती है। इस अग्नि को भस्म भी कहा जाता है, क्योंकि यह सबकुछ को भस्म कर देती है। जठराग्नि की इस अवस्था भेद की स्थिति मानवशरीर में पित्त दोष की अधिकता के कारण होती है।

1.3 मन्दाग्नि:- इस अवस्था में जठराग्नि अत्यधिक मन्द गति वाली हो जाती है। जिस कारण अत्यधिक अल्प मात्रा में खाये गये भोजन का भी पाचन ठीक प्रकार से नहीं हो पाता है। इस कारण शरीर के पेट और सिर, अङ्गों में भारीपन, श्वसन प्रक्रिया का बाधित होना, उल्टी, शरीर में विकारादि उत्पन्न हो जाते हैं। अग्नि की यह अवस्था कफ दोष के कारण होती है। अत्यन्त सहायक है। जठराग्नि की समाग्नि समय पर और उचित मात्रा में खाये

1.4 समाग्नि:- जठराग्नि की समान अवस्था शरीर के स्वस्थ रहने में गये भोजन का पाचन कार्य ठीक प्रकार से करके शरीर को निरोग रखती है, क्योंकि इस समय भोजन का पाचन न अधिक, जल्दी, न अधिक मन्द होता, अपितु समान स्थिति में हो जाता है। इस अवस्था में वात, पित्त और कफ-ये तीनों दोष भी मानव शरीर में समानवस्था में ही रहते हैं।

2. भूताग्नियाँ:- पञ्चमहाभूतों की प्रधानता को केन्द्रित करके यह अग्नियाँ भी पाँच प्रकार की हो जाती है। ये पञ्चभूताग्नियाँ जठराग्नि के द्वारा किये गए पाचित खाने का अपने महाभूत के अनुरूप रस में परिवर्तन करती हैं और उनका पाचन करती हैं। यह भूताग्नि का समूह मानव शरीर के यकृत अंश में विद्यमान रहता है और भोजन को पाँच अङ्गों में विभक्त करके अपने-अपने महाभूत से संयोग करके शरीर का पूर्णता पोषण और सम्बद्धन प्रदान करती है। पञ्च महाभूतों के आधार पर यह पञ्चभूताग्नि इस प्रकार हैं- 1. भौमाग्नि, 2. आप्याग्नि, 3. आग्नेयाग्नि, 4. वायव्याग्नि और 5. आकाशाग्नि।

3. धात्वग्नियाँ:- सप्त धातुओं से युक्त होने से यह अग्नियाँ भी सात प्रकार की हो जाती है। यह सप्तधात्वग्नियाँ जठराग्नि और पञ्चभूताग्नि के द्वारा किये गए पाचित भोजन के अंश का परिवर्तन अपने-अपने धातुओं के अंशों के अनुसार करके पुनः इसका पाचन करती हैं। इन धात्वग्नियों के तीव्र होने सम्बद्ध धातु की वृद्धि और मन्द होने से सम्बद्ध धातु भी क्षय को प्राप्त होते

हैं। जिसके कारण रोगादि विकार उत्पन्न होते हैं। जिस प्रकार मानव शरीर में सात धातुएँ विद्यमान हैं, उसी कारण उनकी अग्नि भी सात प्रकार की हो जाती है, जो शरीर में विद्यमान रहकर अपना कार्य करती है। ये सप्तधात्वग्नियाँ इस प्रकार हैं- 1. रसाग्नि, 2. रक्ताग्नि, 3. मांसाग्नि, 4. मेदोग्नि, 5. अस्थ्यग्नि, 6. मज्जाग्नि और 7. शुक्राग्नि पुरुषों में और रजोग्नि स्त्रियों में पाचन क्रिया की सम्पादन करती है।

इस प्रकार ये सभी अग्नियाँ संयुक्त होकर भोजन को किस प्रकार शरीर के अनुरूप बनाती है। यह अत्यन्त सूक्ष्म प्रक्रिया के साथ दर्शनीय तत्त्व भी है। यदि ये अग्नि न हो, तो भोजन का पाचन ही सम्भव नहीं है और यदि अग्नि नष्ट हो जाये, तो मानव शरीर भी नष्ट हो जायेगा।

Lecture by-

Dr. Ritu Mishra

Department of Sanskrit

Shivaji College.